हिंदी कथारचना

447

बचपन की यादों में

बरसात का समय था। नीले आसमान काले बादलों से भर गया था। सूरज इन बादलों के पीछे छिपा था। बिजली चमक रही थी। बादलों से पानी की छोटी-छोटी बूँदें मोती-जैसे धरती में पड़ा। बरसात शुरु हो गया। बारिश के साथ ठंडी हवा भी बह रही थी। हवा ने नई मिट्ठी की गंध वातावरण में फैला दिया।

घर में वह अकेली थी। वह उस छोटी घर के सबसे छोटे खिड़कियों से बारिश की मनोरंजक दृश्य देख रही थी। धीरे-धीरे वह अपनी बचपन की यादों में लीन हो गई। बारिश की जैसे उसकी आँखों से आँसू बहने लगी।

जब वह अपनी बचपन की बारे में सोचती थी, है तब सदा उसकी आँखें भर जाती है। थी। क्योंकि उसकी बचपन की यादें खिलौने, नटखटें या खुशियाँ से भरी नहीं, हताशा और दुःख से भरी थी। धीरे-धीरे उसकी मन में एक [redacted] चेहरा आया और जब वह उस चेहरा को समझ पाया तब उसकी होंठों ने ऐसे मंत्रण किया - "मेरी पापा....."। उसकी मन पापा की यादों से भर गया। और [redacted] उस दिन की यादें उसकी [redacted] पास आया जिन्हें उसे अपनी पूरी जिंदगी में कभी नहीं भूल सकेगी।

~~वह एक बारिश का दिन था।~~

दस सालों के पहले एक बारिश का दिन था। तब वह पाँचवी में पढ़ती थी। वह स्कूल जाने की तैयारी कर रही थी। वह नाश्ता करने के लिए रसोई तक आया। अचानक वह रुक गयी। "माँ की आवाज सुन रही हूँ। लेकिन माँ किससे बात करते है? घर में हम दोनों अकेला है ना?" उसने सोचा। वह माँ की पास गया और माँ से पूछा - "अम्म किस से बात कर रही है माँ?" "मैं तेरी पापा को नाश्ता करने के लिए बुला रही है।" माँ ने कहा। "लेकिन पापा यहाँ नहीं है माँ।" उसकी बात सुनकर माँ ने मुस्कुराया और धान्य सिर में लगाकर उससे कहा "हाँ मीनु, मैं वह भूल गया।"

मीनु की माँ

वह ऐसी ही है "माँ सदा ऐसी ही थी।" मीनु ने माँ की बारे में सोचने लगी। माँ - बाप के प्यार की बारे में और उसकी परिवार की खुशियों के बारे में सोचने लगी।

"माँ सदा ऐसी ही थी। वो सदा पापा से बात करते ही रहती थी। लेकिन नहीं सोचती थी कि माँ की बातें सुनने के लिए पापा उसकी पास है या नहीं। उस दिन पापा घर में नहीं था। वो काम - संबंधी बातें के लिए दिल्ली गया था। लेकिन माँ वह सब भूल गयी। क्योंकि माँ सदा पापा की साथ ही रहनी चाहती थी। पापा को भी माँ से दूर रहना कुछ मुश्किल था। मैंने नाश्ता करके घर से स्कूल जाने के लिए निकला जब दरवाजा तक गया तब याद आया कि कुछ भूल गया है। मैंने माँ की पास लौट आया और पूछा "पापा कब आएगा?"

"कल आएगा बेटी।" - माँ ने कहा। इतना सुनकर मैं स्कूल जाया।

हिंदी कथारचना

माँ से ऐसा पूछना केलिए एक कारण था कि दूसरे दिन माँ की जन्मदिन था। माँ की जन्मदिन हमारे घर के त्योहार था। मेरी जन्मदिन भी इतनी धूम - धाम से कभी नहीं मनाया था। जब मैं यह बात पापा से कहा तब उन्होंने कहा कि हमारे घर और परिवार की सभी खुशियों की कारण माँ ही है। इसलिए जैसे माँ हमें आनंद देते है वैसे हम भी माँ की जन्मादिन अच्छी तरह मनाकर उन्हें खुशी बनाना है।

स्कूल में पहली घंटी थी। अध्यापिका ने नई पाठ सीख रही थी। तब स्कूल की प्यून ने कक्षा की दरवाजा में आया और अध्यापिका को बुलाया। वह दोनों के बीच थोड़ी देर की बात-चीत के बाद अध्यापिका ने मुझे बुलाया और कहा की हम घर जाना है। मैंने पूछा कि - "क्यों?" लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला। हम घर पहुँचा और मैंने अध्यापिका की हाथ पकड़कर घर की दरवाजे की ओर चला। आश्चर्य की बात यह था कि घर के बाहर बहुत सारे लोग खड़ा हो गए थे। जब हम घर की अंदर प्रवेश किया तब भी वहाँ एक भीड़ था। सब लोग मुझे देख रहे थे। लेकिन मुझे नहीं समझ पाया कि उन दृष्टि में क्या है। घर के अंदर बरांदा तक आकर हम रुक गया। पापा जमीन में पड़ा था। मैंने सोचा कि वो सो रहा है। माँ पापा की पास बैठ गयी थी।

पापा की शरीर में एक सफ़ेद आवरण था।
उसकी पैर के दोनों उँगलियों
और उसका सिर में भी बाँधी थी। मुझे कुछ
नहीं समझा यदि पापा सो रही है तो माँ क्यों रोते है?
जब माँ ने मुझे देखा तब वह धीरे उठाया। वह धीरे
धीरे मेरी पास आई। धीरे उसकी काँपती होंठों
मेरी ललाट पर दबाया। फिर पापा की ओर मुड़कर
उससे कहा - "देखो हमारे बेटी आया है। आँखें खोलो
और देखो तेरी परिवार को। आप ने क्या कहा था जी?
आपको याद है ना? लेकिन मुझे याद है। आप ने कहा
था कि आप सदा हमारे साथ ही रहेगा। हमें
कभी नहीं अकेला बना देंगा। लेकिन अब क्या हुआ।"
माँ ने जोर से रो रही थी। वह सुनकर मैं भी
रोने रहा। माँ ने उसकी काँपती हाथों से मेरी हाथ
पकड़ा और कहा - "तू क्यों रोते है? तेरे साथ तेरी माँ है
ना। माँ सदा तेरी साथ ही रहेगी बेटी। मैं तुझे कभी
नहीं अकेला बना दूँगी। तू अकेली नहीं है। लेकिन
मैं.... मैं.... अकेली हूँ।"
उस दिन की बाद में माँ की
होंठों में एक मुस्कुराहट कभी नहीं देखा था। पापा
सदा कहते थे कि माँ एक दीप है जो हमारे घर में
परिवार में प्रकाश फैलाते थे। लेकिन उस दिन मुझे
समझा कि वह दीप को जलाने वाला 'पापा' ही था।
[illegible] पापा [illegible] गया तब वह दीप भी बुझ गया।
[illegible] [illegible] खुशियाँ की नगर हो गया। हम अकेला हो गया।
[illegible] [illegible] [illegible] और खुशियाँ [illegible] भरी बचपन एक सपना
[illegible] [illegible]

हिंदी कथारचना

मॉं से ऐसा पूछना केलिए एक कारण था कि दूसरे दिन मॉं की जन्मादिन था। मॉं की जन्मादिन हमारे घर के त्योहार था। मेरी जन्मादिन भी इतनी धूम - धाम से कभी नहीं मनाया था। जब मैं यह बात पापा से कहा तब उन्होंने कहा कि हमारे घर और परिवार की सभी खुशियों की कारण माँ ही है। इसलिए जैसे माँ हमें आनंद देते हैं वैसे हम भी माँ की जन्मादिन अच्छी तरह मनाकर उन्हें खुशी बनाना है।

स्कूल में पहली घंटी थी। अध्यापिका ने नई पाठ सीख रही थी। तब स्कूल की प्यून ने कक्षा की दरवाजा में आया और अध्यापिका को बुलाया। वह दोनों के बीच थोड़ी देर की बात - चीत के बाद अध्यापिका ने मुझे बुलाया और कहा की हम घर जाना है। मैंने पूछा कि - "क्यों?" लेकिन मुझे कोई जवाब नहीं मिला। हम घर पहुँचा और मैंने अध्यापिका की हाथ पकड़कर घर की दरवाजे की और चला। आश्चर्य की बात यह था कि घर के बाहर बहुत सारे लोग खड़ा हो गए थे। जब हम घर की अंदर प्रवेश किया तब भी वहाँ एक भीड़ था। सब लोग मुझे देख रहे थे। लेकिन मुझे नहीं समझ पाया कि उन दृष्टि में क्या है। घर के अंदर बरांदा तक आकर हम रुक गया। पापा जमीन में पड़ा था। मैंने सोचा कि वो सो रहा है। माँ पापा की पास बैठ गयी थी।

पापा की शरीर में एक सफ़ेद आवरण था।
उसकी पैर के दोनों उँगलियों
और उसका सिर में भी बाँधी थी। मुझे कुछ
नहीं समझा यदि पापा सो रहा है तो माँ क्यों रोते है?
जब माँ ने मुझे देखा तब वह धीरे उठाया। वह धीरे
धीरे मेरी पास आई। धीरे उसकी काँपती होंठों
मेरी ललाट पर दबाया। फिर पापा की ओर मुड़कर
उससे कहा - "देखो हमारे बेटी आया है। आँखें खोलो
और देखो तेरी परिवार को। आप ने क्या कहा था जी?
आपको याद है ना? लेकिन मुझे याद है। आप ने कहा
था कि आप सदा हमारे साथ ही रहेगा। हमें
कभी नहीं अकेला बना देगा। लेकिन अब क्या हुआ।"
माँ ने जोर से रो रही थी। वह सुनकर मैं भी
रोने रहा। माँ ने उसकी काँपती हाथों से मेरी हाथ
पकड़ा और कहा - "तू क्यों रोते है? तेरे साथ तेरी माँ है
ना। माँ सदा तेरी साथ ही रहेगी बेटी। मैं तुझे कभी
नहीं अकेला बना दूँगी। तू अकेली नहीं है। लेकिन
मैं.... मैं.... अकेली हूँ।"

उस दिन की बाद में माँ की
होंठों में एक मुस्कुराहट कभी नहीं देखा था। पापा
सदा कहते थे कि माँ एक दीप है जो हमारे घर में
और परिवार में प्रकाश फैलाते थे। लेकिन उस दिन मुझे
समझा कि वह दीप को जलाने वाला 'पापा' ही था।
जब पापा चला गया तब वह दीप भी बुझ गया।
हमारी सभी खुशियाँ भी नष्ट हो गया। हम अकेला हो गया।
उस मेरी सुंदर और खुशियाँ से भरी बचपन एक सपना
बन गया।